2. BHARAT IS MY HOME

Dr. Zakir Husain

Paragraph-01:

I must confess that I am overwhelmed by the trust my people have placed in me by electing me to the highest office in the land. मैं जरूर मानता हूँ के लोगों ने जो मुझे इस भूमि के अति उच्च पद के लिए चुन के मुझ में विश्वास जताया (दिखाया) है उस से मैं घबराय हुआ हूँ

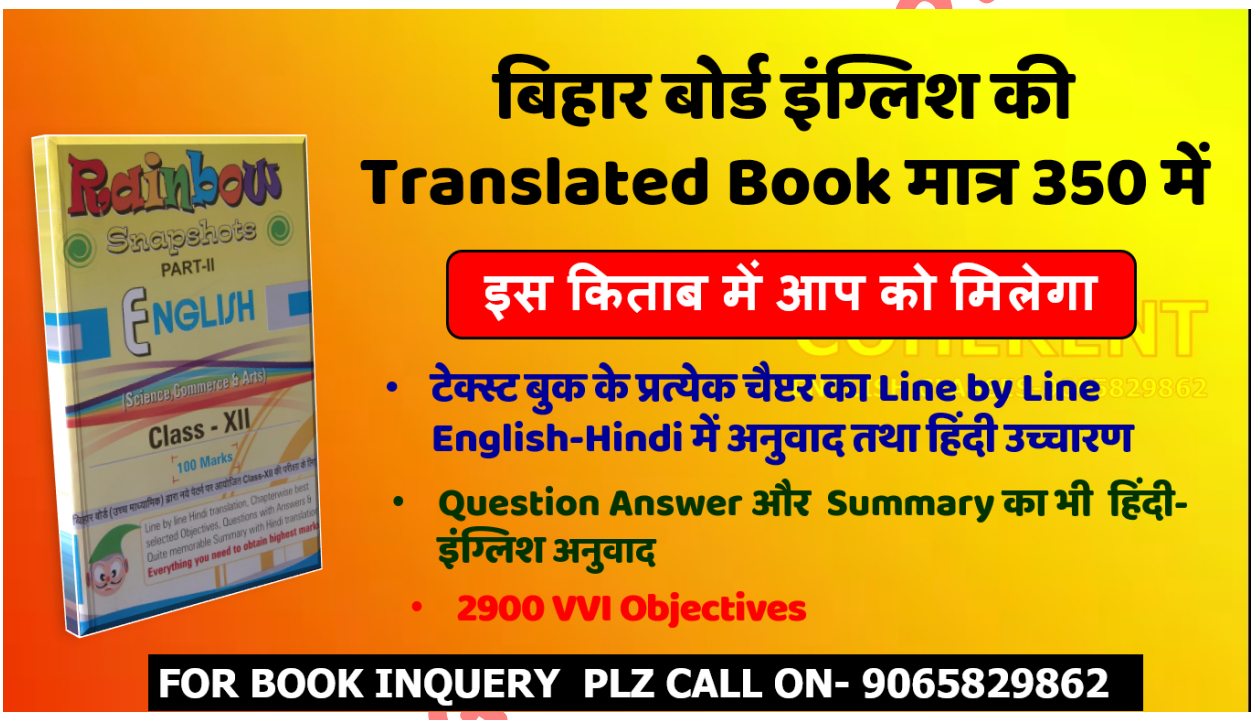

Paragraph-02:

Dr. Radhakrishnan brought to the Presidency a mental equipment, a degree of erudition and wealth of experience rarely to be found anywhere. During a lifetime devoted to the pursuit of knowledge and truth, he has done more than probably any other man to bring out and explain Indian philosophical thought - and die oneness of all true spiritual values. He has never lost his faith in the essential humanity of man and himself has never ceased to champion the right of all men to live in dignity and with justice. डॉ. राधाकृष्णन अपने शासनकाल में बौद्धिक संवृद्धि, विद्वत्ता और अनुभव ज्ञान ले कर आए जो बहुत ही कम कहीं पाया जाता है, अपने पूरे जीवनकाल में

Please Subscribe us on Youtube, Facebook & Telegram

ज्ञान और सत्य के खोज के साधक रहे उन्होंने शायद औरों से कहीं ज्यादा भारतीय दार्शनिक विचार के प्रचार - प्रसार के लिए काम किया है और सच्चे आध्यात्मिक मूल्यों को एकता में पिरोते -पिरोते मृत्यु लोक को प्राप्त करेंगे उन्होंने मानवता के स्तम्भ को कभी नहीं छोड़ा और उन्होंने खुद मनुष्य के गरिमा और न्याय के साथ रहने के अधिकार का साथ देना नहीं कभी नहीं छोड़ा।

Paragraph-03:

I can only assure you that I enter this office in a spirit of prayerful humility and total dedication. I have just taken the oath of loyalty to the of India. - It is the Constitution of a comparatively new State which its free citizens have for the first time in history given to themselves It is the young State of an ancient people who, through a long millennia and through the cooperation of diverse ethnic elements, have striven to realise timeless, absolute values in their own peculiar way, I pledge myself to the service of those values. For, though some concrete realizations of a value may become inadequate with the change of circumstance the value remains eternally valid and presses for newer and fresher realization the past is not dead and static, it is alive and dynamic and is involved in determining the quality of our present and the prospects of our future. मैं सिर्फ इतना भरोसा दे सकता हूँ की मैं विनम्रता और कुल समर्पणता की भावना मे इस कार्यालय में प्रवेश किया हूँ मैंने अभी-अभी भारतीय संविधान के प्रति वफादार होने की प्रतिज्ञान ली है ये औरों के बनिस्बत नए गणराज्य की संविधान है जो उनके स्वतंत्र नागरिक को इतिहास में पहली बार दिया गया है ये नई राज है प्राचीन लोगों की , जो विभिन्न जातीय तत्व के सहयोग से लम्बी सदियों से होते हुए अपने-अपने अनोखे अंदाज में कड़ी मेहनत से अनंत तथा पूर्ण मूल्य को साकार करने का प्रयास किया. मैं खुद से विनती करता हूँ कि वो इस मूल्यों की सेवा करे, यद्यपि (अगरचे) किसी मूल्य के कुछ यथार्थपूर्ण प्राप्तियां परिस्थिति में बदलाव के साथ अपर्याप्त हो जाए मूल्य हमेशा के लिए वैध रहता है और नए और ताजे प्राप्ति के लिए दबाव बनता है अतीत नहीं मारा है न ही गतिहीन हुआ है, ये जीवित और गतिशील है. और ये हमारे वर्तमान की गुणवत्ता तथा भविष्य की संभावना को निर्धारित करने में सहायक हुआ है

Paragraph-04:

The process of its constant renewal is, indeed, the process of growth of national culture and national character. इसकी लगातार नवीनीकरण की प्रक्रिया वास्तव में, राष्ट्रीय संस्कृति और राष्ट्र प्रतिष्ठा के विकास की प्रक्रिया है। ये शिक्षा का सरोकार , जैसा की मैं देखता हूँ; इस नित्य नवीकरण का

COHERENT ENGLISH CLASSES DARBHANGA

अनुष्ठान करना शायद मुझे माफ़ कर दिया जाए (अगर मैं गलत हूँ तो) मेरी इस अवधारणा पे, की मेरा चुनाव इस उच्च पद के लिए पूर्णतः नहीं तो कम से कम मुख्यतः अपने लोगों के साथ शिक्षा के लिए लम्बे समय से जुड़े रहने की वजह से किया गया है मेरा मानना है कि राष्ट्र के उद्देश्य (प्राप्ति) के लिए शिक्षा प्रारंभिक जरिया है. और इस के शिक्षा की गुणवत्ता अनिवार्य रूप से राष्ट्र की गुणवत्ता का भागीदार है

Paragraph-05:

I, therefore, pledge myself to the loyalty of our past culture, from wheresoever it may have come and by whomsoever it may have been contributed. I pledge myself to the service of the totality of my country s culture. I pledge my loyalty to my country, irrespective of religion or language. I pledge myself to work for its strength and progress and for the welfare of its people without distinction of cast, colour or creed. The whole of Bharat is my home and its people are my family. The people have chosen to make me the head of this family for certain time. It shall be my earnest endeavour to seek to make this home strong and beautiful, a worthy hope for a great people engaged in the fascinating tasks of building up a just and prosperous and graceful life. इसलिए मैं अपनी जमानत देता हूँ, अपनी कदीम(पिछली) तहजीब (संस्कृति) से वफादारी करने की (भले ही) जहाँ कहीं से आई हो. और जिस किसी ने भी योगदान दिया हो. मैं अपनी जमानत देता हूँ अपने देश की संस्कृति की कुल समग्रता के साथ सेवा करने की, मैं अपनी वफादारी अपने देश के पास गिरवी रखता हूँ. भाषा और धर्म की परवाह किये बिना. मैं अपनी जमानत देता हूँ कि, बिना किसी नस्ल, पंथ, रंग के भेद भाव के इन के लोगों (भारत के लोगों) के भलाई के लिए और इसके सशक्तिकरण तथा प्रगति के लिए काम करूँगा. सारा हिदुस्तान मेरा घर और उसके सारे लोग मेरा परिवार है. लोगों में कुछ समय के लिए मुझे इस परिवार के मुखिया के तौर पर चुना है, मेरा अथक प्रयास इस घर को खूबसूरत और मजबूत बनाने के लिया कोशिस करना होगा. महान लोगों की मूल्यवान आशा न्यायसंगत, समृद्ध और सुखद जीवन बनाने के मनमोहक कार्य में लीन रहूँगा

Paragraph-06:

The family is big and is constantly growing at a rather inconveniently fast pace. We shall, each one of us, have to participate unsparingly in building its new life, each in his own way. For sheer size the tasks ahead of us are so demanding that no one can afford to sit back and just watch or let frustration become endemic in our country The situation demands of us work, work, and more work, silent

COHERENT ENGLISH CLASSES DARBHANGA

and sincere work, solid and steady reconstruction of the whole material and cultural life of our people. परिवार बड़ा है और ये बढ़ता जा रहा है बल्कि असुविधाजनक तेज रफ़्तार से सख्ती से हम में से हर कोई को अपनी-अपनी तरह से भाग लेना पड़ेगा इसके जीवन को सवारने के लिए बड़े से काम के लिए जो हमारे राह में है इतना आवश्यक है की कोई भी हाथ पे हाथ रख के बैठा देख नहीं सकता या फिर निराशा को हमारे देश में आम नहीं होने दे सकता , हालत की मांग है की हम लोग काम काम और काम करे ख़ामोशी और ईमानदारी से काम करे. पूरे तथ्य तथा हमारे लोगों के सांस्कृतिक जीवन का मजबूत और नित्य निर्माण करे

Paragraph-07:

This work, as I see it, has two aspects: work on one's self and work for the society around. - They are mutually fruitful aspects of work. The work on one's self is to follow the urge towards moral development as a free person under self-imposed discipline, which alone can render that development possible. Its end-product is a free moral personality. We can neglect the end-product only at our peril. This end-product cannot sustain itself without seeking and exercising itself to bring about the approximation of the society in which it is privileged to serve to a better, a juster and a more graceful way of life. The individual cannot grow to the full perfection without a corresponding advance of the collective social existence. Let us resolve to get whole-heartedly engaged in these two aspects of work individual and social: इस काम का जैसा की मैं देख रहा हूँ दो पहलु है अपने लिए काम करो और अपने आस-पास के समुदाय के लिए काम करो ये दोनों काम आपस में लाभदायक स्वरूप हैं. खुद को सवारना एक स्वतंत्र व्यक्ति के रूप में नैतिक विकास की चाह में आत्मारोपित अनुशासन का साथ देगा, जो अकेले उस विकास को संभव बनाने में साथ देगा इसका अंतिम परिणाम साफ सुथरी नैतिक व्यक्तित्व है हम इस अंतिम परिणाम को अपने जिम्मेदारी पर नजरअंदाज कर सकते हैं ये अंतिम परिणाम (तब तक) अपने आप में जीवित नहीं रह सकता (जब तक) समाज को समीप लाने के लिए खुद में खोजने और अभ्यास करने की (कोशिश) नहीं किया जाए जो एक अच्छा, एक न्यायसंगत, एक जीवन के सुन्दर आचरण से गौरवान्वित हो. सामूहिक सामाजिक विद्यमानता के उन्नति के अनुरूपता के बगैर एक व्यक्ति प्रवीणता तक नहीं पहुंच सकता. चलो हम लोग पूरे मन से लग जाए इस काम के दो पहलु व्यक्तिगत और सामाजिक को हल करने में

Paragraph-08:

COHERENT ENGLISH CLASSES DARBHANGA

This dual effort will give to the life of our State a specific flavour. For the State to us will not be just an organization of power but a moral organization. It is a part of national temperament and inheritance from the great leader of our liberation movement, Mahatma Gandhi, that power should be used only for moral purposes. The peace of the strong is what we shall dedicate ourselves to work for. ये दोहरी प्रयास हमारी देश के अस्तित्व में एक विशेष खुशबु देगी. एक देश हमारे लिए सिर्फ एक शक्ति का व्यवस्थापन नहीं होगा बल्कि एक नैतिकता का संगठन भी होगा, ये देश की विरासत और मनोदशा का एक हिस्सा है, हमारे मुक्ति आंदोलन के महान नायक महात्मा गाँधी की ओर से. इस शक्ति का इस्तेमाल केवल नैतिक उद्देश्यों के पूर्ति के लिए किया जाना चाहिए. बल की शांति यही है कि हम लोग अपने आप में क्या करने का निश्चय करेंगे

Paragraph-09:

I have full faith in my people that they will bring forth the energy requisite for the satisfactory performance of this dual task. It shall be my privilege to contribute my share to this enchanting enterprise. मुझे अपने लोगों पर पूरा विश्वास है की वे इस दोहरे कार्य के संतोषजनक प्रदर्शन के लिए ऊर्जा की आवश्यकता के लिए आगे आएँगे. ये मेरा स्वभाग होगा की मैं इस करामाती उद्यम (जोखिम भरे काम) में अपने हिस्से का योगदान करूँगा

❀ ❀ ❀

COHERENT ENGLISH CLASSES DARBHANGA